अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) जो आत्मा को मलिन करे, उसे कहते है-

(क) जीव तत्त्व (ख) पुण्य तत्त्व

(ग) पाप तत्त्व (घ) संवर तत्त्व ( )

(b) निम्न में से अरूपी तत्त्व है-

(क) मोक्ष (ख) पुण्य

(ग) पाप (घ) आश्रव ( )

(c) 'हड़मची' किसका भेद है-

(क) अप्काय (ख) पृथ्वीकाय

(ग) तेउकाय (घ) वायुकाय ( )

(d) पुण्य तत्त्व कितने प्रकार से भोगा जाता है-

(क) 18 (ख) 42

(ग) 82 (घ) 20 ( )

(e) जयंतीबाई के प्रश्न वर्णित हैं-

(क) नन्दी सूत्र (ख) आवश्यक सूत्र

(ग) भगवती सूत्र (घ) सूखविपाक सूत्र ( )

(f) किस कारण से जीव संसार सागर में परिभ्रमण करता है-

(क) पाप के सेवन से (ख) पुण्य के सेवन से

(ग) संवर के सेवन से (घ) लोभ के सेवन से ( )

(g) कौनसे जीव मोक्ष में जाते हैं-

(क) भवी जीव (ख) अभवी जीव

(ग) दोनों ही (घ) दोनों ही नहीं ( )

(h) भव-भ्रमण के थोकड़े का वर्णन भगवती सूत्र के कौनसे शतक में किया गया है-

(क) 7वें शतक में (ख) 11वें शतक

(ग) 12वें शतक (घ) 14वें शतक ( )

(i) पहली ग्रैवेयक के देव जघन्य कितने पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं-

(क) 14 पक्ष (ख) 22 पक्ष

(ग) 28 पक्ष (घ) 23 पक्ष ( )

(j) एक मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख किससे बढ़कर होता है-

(क) भवनपति देव से (ख) ज्योतिषी देव से

(ग) वाणव्यन्तर देव से (घ) वैमानिक देव से ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) योग और कषाय कर्मबंध का कारण है। ( )

(b) 'जलरूहा' प्रत्येक वनस्पति का एक भेद है। ( )

(c) शस्त्र आदि से लगने वाली क्रिया पुट्टिया है। ( )

(d) लोक भावना अर्जुन अणगार ने भाई थीं। ( )

(e) अव्यवहार राशि में भवी जीव ही होते हैं। ( )

(f) धर्मी जीव जागते हुए अच्छे होते हैं। ( )

(g) अठारह पापों का त्याग करने से जीव कर्मों की स्थिति घटाता है। ( )

(h) निगोद से प्रत्येक समय असंख्यात जीव काय परीत्त में आते हैं। ( )

(i) श्वासोच्छ्वास के थोकड़े का उल्लेख प्रज्ञापना सूत्र में किया गया है। ( )

(j) पाँच मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रंथ का सुख ज्योतिषी देवों के सुख से बढ़ कर होता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	उपयोग लक्षण	(क) एकान्त मिथ्यादृष्टि	.....
(b)	कुंथुआ	(ख) मृगापुत्र जी	.....
(c)	भवसिद्धिक जीव	(ग) 18 पापों का सेवन	.....
(d)	पंचेन्द्रिय जीवों का श्वासोच्छ्वास	(घ) ढ़ाई पुद्गल परावर्तन काल	.....
(e)	शाश्वत सिद्धि सुख	(च) जीव	.....
(f)	अन्तरद्वीपा युगलिक मनुष्य	(छ) मोक्ष	.....
(g)	संसार परिभ्रमण	(ज) अनादि अनन्त	.....
(h)	निगोद की स्थिति	(झ) स्पर्शन,मुख एवं घ्राण	.....
(i)	आकाश श्रेणी	(य) गजसुकुमाल मुनि	.....
(j)	अन्यत्व भावना	(र) तेइन्द्रिय	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं क्रिया का एक भेद हूँ, जो घी-तेल के पात्र खुले रखने से लगती है। .....

(b) मैने अशुचि भावना भाई थीं। .....

(c) मैं विनय का एक ऐसा भेद हूँ, जिसमें गुरु महाराज के अनुकूल रहकर प्रवृत्ति की जाती है। .....

(d) मेरे सेवन से जीव भारी होता है। .....

(e) मेरे सोने से प्राण, भूत, जीव, सत्व दुःख नहीं पाते हैं। .....

(f) मेरी राशि के जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं। .....

(g) मेरा वर्णन भगवती सूत्र के 12वें शतक के 7वें उद्देशक में किया गया है। .....

(h) मैं कर्म का वह भेद हूँ, जिसके उदय होने से जीव निगोद को छोड़कर प्रत्येक काय में आ जाता है। .....

(i) मैं भवनपति देवों का एक भेद हूँ, मेरी जघन्य श्वासोच्छ्वास स्थिति 7 स्तोक है। .....

(j) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 24 पक्ष में उत्कृष्ट 25 पक्ष में होता है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) जलचर के कितने भेद हैं ? नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(b) प्रतिसंलीनता का अर्थ क्या है तथा इसके कितने भेद हैं ?

.....

.....

.....

(c) स्वाध्याय के पाँच भेद अर्थ सहित लिखिए।

.....

.....

.....

(d) द्रव्य व्युत्सर्ग के चार भेद लिखिए।

.....

.....

.....

(e) सिद्ध आत्मा के आठ गुण लिखिए।

.....

.....

.....

(f) आश्रव के जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट भेदों की संख्या लिखिए।

.....

.....

.....

(g) धर्मी जीव जागते हुए क्यों अच्छे होते हैं ?

.....

.....

.....

(h) अव्यवहार राशि में कौन-कौनसे जीव होते हैं ?

.....

.....

.....

(i) दूसरे देवलोक के देवों की जघन्य एवं उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास की स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

(j) दुःखी एवं सुखी जीवों में श्वासोच्छ्वास क्रिया का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

(k) तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख किससे बढ़कर होता है ?

.....

.....

.....

(l) कौनसा साधु तेजो लेश्या रूपी सुख की अनुभूति करने वाला होता है ?

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) नारकी के चौदह भेदों को विस्तार से लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) बाईस परीषहों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) प्रायश्चित्त लेने वाले के 10 गुण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) धर्मध्यान के चार लक्षण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) स्थिति बंध एवं अनुभाग बंध को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) नवतत्त्वों को जानने से जीव को क्या लाभ होता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(g) श्रौत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बांधता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(h) जीव के हल्का एवं भारी होने के क्या कारण हैं ? उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) संसार में ऐसे कौन-कौन से स्थान है, जहाँ पर जीव ने अनन्त बार जन्म-मरण नहीं किया है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(j) दसवें, ग्यारहवें एवं बारहवें देवलोक में जघन्य एवं उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास की स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(k) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जाति के जीव कौन-कौनसी इन्द्रियों से श्वास लेते हैं तथा छोड़ते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(l) श्रमण निर्ग्रन्थों का संयम-सुख कैसे बढ़ता हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....